

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 30

2017

JOURNAL OF THE MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD



EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava

Prof. Vandana Gupta

अनुक्रमणिका

1.	कण्णुआ शिलालेख : एक तथ्यपरख अध्ययन डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ	1
2.	विदिशा परिक्षेत्र के शिल्पकार डॉ. रामकुमार अहिरवार	7
3.	बघेलखण्ड की आर्थिक स्थिति (प्रथम सदी से बारहवीं सदी तक) अभिलेखों एवं साहित्य के आधार पर डॉ. विभा श्रीवास्तव	12
4.	सागर के सन्दर्भ में ब्रिटिश कालीन साक्ष्य डॉ. रोचना जैन	16
5.	भारतीय सवैधानिक विकास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रकृति डॉ. सीमा झेरवार	19
6.	शैव तीर्थ कालिंजर : एक ऐतिहासिक अध्ययन डॉ. अरविन्द दीक्षित	25
7.	मध्यकाल में सागर क्षेत्र का इतिहास प्रोफेसर बी. के. श्रीवास्तव	29
8.	ऐसाह के तोमर जागीरदार और पुरातात्विक स्रोतों का सर्वेक्षण डॉ. मीना श्रीवास्तव	35
9.	राष्ट्रवाद से परिप्लूत चित्रकार लक्ष्मण पै का व्यक्तित्व एवं कृतित्व डॉ. कुमकुम माथुर	43
10.	राजनीति एवं प्रशासन का मूल : कौटिल्य का अर्थशास्त्र डॉ. सीमा पान्डेय	47
11.	“भारत में दलितों के बदलते आयाम एवं दलितोद्धार के प्रयास” अभिषेक अग्रवाल	51
12.	“गुरु घासीदास - छत्तीसगढ़ में समाजवाद के प्रवर्तक” अतुल कुमार मिश्र	58
13.	‘त्रिवेणी’ सनातन का समकाल डॉ. सुधा सोनी	63
14.	सांदीपनि आश्रम-सम्यक् प्राचीन मन्दिर शिक्षा के केन्द्र के रूप में डॉ. रंजना शर्मा (व्यास)	68

मध्यकाल में सागर क्षेत्र का इतिहास

प्रोफेसर बी. के. श्रीवास्तव

इतिहास विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

जिस प्रकार अति प्राचीन काल में दजला-फरात, नील, सिन्ध एवं ह्यांग हो नदी के आसपास क्रमशः मेसोपोटामिया, मिस्र, सिन्धु घाटी सभ्यता एवं चीन की सभ्यता विकसित हुई, उसी प्रकार सागर के तालाब के आस-पास सागर नगर मध्यकाल में विकसित हुआ। यदि मिस्र नील नदी का उपहार है तो सागर लाखा बन्जारा तालाब का उपहार है। इस तालाब को लाखा बन्जारा तालाब इसलिये कहा जाता है क्योंकि इस तालाब के निर्माण का श्रेय उसी को जाता है। लाखा बन्जारा, बन्जारों का मुखिया था। इसे लाखा बन्जारा इसलिये कहा जाता था क्योंकि उसके पास एक लाख के लगभग बैल थे। 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय को परास्त किया। इसके बाद मुहम्मद गौरी की 1206 ई. में मृत्यु के पश्चात उसके दास कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) ने भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना की। सल्तनत का प्रथम वंश दास वंश कहलाया। इस समय सागर के विभिन्न भू भागों पर स्थानीय दांगी, गोंड एवं अहीर आदि छोटे-छोटे राजाओं ने आधिपत्य स्थापित किया।

सागर से उत्तर की ओर सागर-झांसी मार्ग पर लगभग 10 कि.मी. दूर सड़क के दांयी ओर पहाड़ी पर गढ़पहरा स्थित है। यहां दांगी राजपूतों ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। दांगी अपने आपको नरवर (वर्तमान में शिवपुरी जिले में स्थित) के राजा दंग से सम्बद्ध मानते हैं, जो कि एक कछवाहा राजा था। एक अन्य मत के अनुसार दांगी जौनपुर से सागर क्षेत्र में आये। कहा जाता है कि 11वीं शताब्दी में जालौन के राजपूत राजा निहाल शाह ने अहीरों को परास्त कर सागर के आसपास के गाँवों पर अधिकार कर लिया। जो भी हो खुरई, खिमलासा, एरण, दुगाहा, एवं मालथौन पर दांगी राजा का प्रभुत्व था। उनके नाम के कारण इस संपूर्ण प्रदेश डांगीवाड़ा कहा जाता था। 1023 ई. में निहाल शाह ने गढ़पहरा में किला बनवाया।

1202 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने बुन्देलखण्ड के कालिंजर किले पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार इस क्षेत्र में मुस्लिम प्रभुत्व का आरंभ हुआ। 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) ने मालवा पर अधिकार कर लिया। 1307 ई. में उसने दक्षिण भारत पर विजय के लिये अभियान भेजा। संभवतः यह दक्षिण अभियान का मार्ग सागर क्षेत्र से ही होकर गुजरा होगा। अतः यह क्षेत्र उस समय अलाउद्दीन खिलजी के नियंत्रण में रहा होगा। चौदहवीं शताब्दी के अन्त में दिल्ली सल्तनत के विघटन के कारण स्थानीय शक्तियों ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। इसी क्रम में जदुराय (यादव राय) नामक व्यक्ति ने सागर के दक्षिण-पूर्व में एक गोंड साम्राज्य की स्थापना कर ली। उसके द्वारा स्थापित गोंड साम्राज्य की राजधानी जबलपुर के निकट गढ़ा थी। जदुराय के वंशज संग्राम शाह (1480-1541 ई.) ने नर्मदा घाटी के एक बड़े भू भाग एवं सागर, दमोह एवं भोपाल राज्य के एक भाग को मिला कर अपने पूर्वजों के राज्य का विस्तार किया।

रामनगर (मण्डला के पास) शिलालेख से पता चलता है कि संग्राम सिंह के राज्य के अन्तर्गत 52 गढ़ थे।